ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

जहरीला चाराः पशुओं के स्वास्थ्य पर छिपा खतरा

डॉ. निखिल श्रृंगी[1] एवं डॉ. पारमेष्ट विष्णु कुमार शर्मा[2]

[1]सहायक आचार्य, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

[2]सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है। दूध, मांस, ऊन और अन्य पशु उत्पादों की उपलब्धता सीधे तौर पर पशुओं के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। पशुओं की सेहत बनाए रखने के लिए उन्हें पौष्टिक और स्वच्छ चारा उपलब्ध कराना आवश्यक होता है। लेकिन कई बार जानवर अनजाने में ऐसे चारे या पौधों का सेवन कर लेते है जिनमें प्राकृतिक रूप से विषैले (जहरीले) तत्व पाए जाते है या जो गलत भंडारण, रासायनिक अवशेषों अथवा फफूंदी लगने के कारण विषाक्त हो चुके होते है।

आज के बदलते कृषि और पर्यावरणीय परिदृश्य मे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से चारे में विषैले तत्वों की मात्रा बढ़ रही है। वही खराब भंडारण और अनियमित चारा प्रबंधन से फफूंदजन्य विषाक्तता जैसी समस्याएँ आम हो गई है।

इन जहरीले चारे का सेवन करने से जानवरों में विभिन्न प्रकार की विषाक्तताएँ उत्पन्न होती है जिनका असर उनके पाचन, तंत्रिका, यकृत व हृदय प्रणाली पर पड़ता है। कई बार इन विषाक्तताओं के कारण जानवरों की दूध उत्पादन क्षमता भी घट जाती है, गर्भपात हो सकता है और गंभीर मामलों में मृत्यु भी हो सकती है। जिससे जानवरों के साथ-साथ पशुपालकों और व्यापक समुदाय के लिए विनाशकारी परिणाम हो सकते है।

पशुओं में विषैले चारे में पाये जाने वाले कुछ विषैले पदार्थ

1. **हेमाग्लगुटिनिनः**- यह पदार्थ मुख्य रूप से सोयाबीन, अरंडी और अन्य दालों के बीजों में पाया जाता है।

लक्षणः हीमाग्लगुटिनिन लाल रक्त कोशिका के साथ मजबूती से जुड़ता है और कोशिका में एग्लुटिनेशन का कारण बनता है।

उपचार: सोयाबीन और अरंडी में मौजूद हीमाग्लगुटिनिन को रातभर भिगोने और भाप देने की प्रक्रिया द्वारा निष्क्रिय किया जा सकता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

2. सायनोजेनेटिक ग्लाइकोसाइड: पशुओ मे इस पदार्थ के अंतग्रहण से भ्ब्छ विषाक्तता उत्पन्न होती है। यह पदार्थ मुख्य रूप से ग्लाइकोसाइड के अंतर्गत आता है और इसके पौधे स्रोत बादाम में एमिग्डालिन, ज्वार में धुरिन, अलसी और कसावा आदि में लिनमारिन हैं। विषाक्तता मुख्य रूप से अग्रआंत किण्वकों में देखी जाती है।

लक्षणः-यह आमतौर पर मेंटल भ्रम, श्वसन संकट, पेट दर्द और उल्टी का कारण बनती है।

उपचार: इस विषाक्तता को रोकने के लिए पशु को अपरिपक्व ज्वार हरा चारा नहीं खिलाना चाहिए। और यदि पशु में भ्ब्छ विषाक्तता के कोई लक्षण दिखाई देते हैं तो उस पशु को पशु चिकित्सक की सलाह के बाद सोडियम थायोसल्फेट या सोडियम नाइट्रेट का इंजेक्शन दिया जाना चाहिए।

3. गॉसीपोल: यह मुख्यतः कपास के बीजों व उसके उत्पादो कपास खली में पाया जाता है।

लक्षणः-यह मुख्य रूप से भूख में कमी, शरीर के वजन में कमी, शरीर में तरल पदार्थ का संचय और हीमोग्लोबिन की मात्रा में कमी का कारण बन सकता है।

उपचार: कपास खली का उपयोग तुरन्त बन्द कर देना चाहिए व इस विषाक्तता को रोकने के लिए पशु को पशु चिकित्सक की सलाह के बाद फेरस सल्फेट को मिलाकर खिलाना चाहिए। टोस्टिंग या हिट उपचार से भी गॉसीपोल की विषाक्तता को कम किया जा सकता है।

4. नाइट्रेट विषाक्तताः पशुओं में औद्योगिक अपशिष्ट से दूषित जल तथा पौधों में ज्वार, बाजरा व मक्का में नाइट्रेट का उच्च स्तर विषाक्तता पैदा कर सकता है।

लक्षणः पशुओं में नाइट्रेट विषाक्तता के कारण गर्भपात, वजन में कमी व दूध उत्पादन में कमी आदि समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

उपचार: चारे में नाइट्रेट विषाक्तता को बेअसर करने के लिए चारे को उसके विकास के चरण के दौरान काटा जाता है और उसे सूखे मोटे चारे के साथ मिलाया जाता है फिर उसे पशुओं को दिया जाता है। नाइट्रेट विषाक्तता का उपचार पशु चिकित्सक की सलाह के बाद मेथिलीन ब्लू घोल का इंजेक्शन देकर किया जा सकता है।

5. मिमोसिन विषाक्तता: नव विकसित हरे चारे में एमिनो एसिड होता है जो मिमोसिन विषाक्तता का कारण बनता है।

लक्षणः-पशुओ मे मिमोसिन विषाक्तता से अत्यधिक लार आना, थायरॉयड ग्रंथि का बढ़ना, सीरम थायरोक्सिन का कम होना, वजन में कमी और मृत्यु आदि का कारण भी बन सकती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

उपचार: मिमोसिन विषाक्तता का महत्वपूर्ण निराकरण धूप में सुखाने, सिलवटों को हटाने तथा चारे में फेरस सल्फेट मिलाने जैसे विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है।

6. धतूराः- धतूरे के पत्ते व बीज में मौजूद एट्रोपिन नामक एल्कलॉइड पशुओं में विषाक्तता का कारण बन सकता है।

लक्षणः-इस विषाक्तता में पशु खाना बंद कर देता है, उसका पेट फूल जाता है और गंभीर रूप में पशु को हृदय और श्वसन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

उपचार: पशु चिकित्सक की सलाह के बाद धतूरा विषाक्तता के लिए पशु को अंतःशिरा रूप से फिजोस्टिग्मिन दिया जाना चाहिए।

7. कांग्रेस घासः- कांग्रेस घास एक आम घास है जो बगीचों में सड़क के किनारे और खरपतवार के रूप में उगती है। इसमें विषाक्तता पैदा करने वाला मुख्य पदार्थ पार्थेनिन होता है।

लक्षणः- इस विषाक्तता के कारण पशुओ मे विभिन्न एलर्जी, शरीर में खुजली, अस्थमा और अन्य श्वसन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

उपचार: प्राकृतिक विधि से लकड़ी की राख और थोड़ी मात्रा में लहसुन पशु को खिलाना चाहिए व पशु चिकित्सक की सलाह के बाद पशुओ को कुछ एलर्जी रोधी दवाइयां भी दी जानी चाहिए।

8. कनेर: इस पौधे के सभी भागों में ग्लाइकोसाइड्स मुख्यतः ओलियंडरिन और नेरीइन होते हैं जो विषाक्तता पैदा करते हैं।

लक्षणः-सफेद तरल द्रव जिसमें ओलियंडरिन नामक पदार्थ होता है जो हृदय विफलता का कारण बनता है।

उपचार: कनेर विषाक्तता मे पशु चिकित्सक की देखरेख मे पशुओ को एक्टिवेटेड़ चारकोल गर्म पानी मे मिलाकर भी दिया जा सकता है।

9. टेनिनः यह मुख्यत बबूल, अर्जून व ओक के पÿाो में पाया जाता है।

लक्षणः-इस विषाक्तता से पाचन क्रिया बाधित होती है साथ ही किडनी व लीवर पर विषेला प्रभाव पड़ सकता है।

उपचार: टेनिन युक्त चारा तुरन्त बन्द करना चाहिए साथ ही पशु चिकित्सक की सलाह के बाद कैल्सियम हाइड्रोक्साइड़ या कैल्सियम कार्बोनेट मिलाकर खिलाने से इसकी विषाक्तता को कम किया जा सकता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

सावधानिया:

- यदि पशुओ में विषाक्तता के कोई भी लक्षण दिखाई दे तो पशुपालको को तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सालय से संपर्क करना चाहिए व विषाक्तता की प्रक्रिया को धीमा करने के लिए पशुपालको को तुलसी, मेथी के बीज का घोल जैसे घरेलू उपाय देने चाहिए।
- पशुओं को दिए जाने वाले भोजन को भिगोकर और पकाकर उपचारित किया जाना चाहिए, जिससे विषाक्त पदार्थ टूट जाते हैं और भोजन पचने में आसान हो जाता है तथा भोजन की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- पशुपालको को अपने पशुओं को पर्याप्त भोजन देना चाहिए ताकि वे अपने पशुओं को अनावश्यक खाद्य पदार्थ खाने से रोका जा सकें।
- बरसात के मौसम में पशुपालको को पशुओं को उचित मात्रा में हरी घास देनी चाहिए, जिससे पशुओ का पाचन स्वास्थ्य सही रहता है।
- खेतों या चरागाहों में जहरीले पौधों की पहचान करके उन्हें हटाना चाहिए।
- सूखे व हवादार स्थान पर चारे को रखना चाहिए ताकि फफूंदी न लगे।
- कीटनाशक के बाद कम से कम 10 -15 दिन बाद ही चारा काटना चाहिए।
- पशुओं को संतुलित आहार खिलाएँ ताकि पाचन तंत्र अनुकूल हो सके।

निष्कर्ष

जहरीले चारे की समस्या को रोकने का सबसे प्रभावी उपाय जागरूकता है। पशुपालक यदि चारा चयन, भंडारण और खिलाने के नियमों का पालन करें तो अधिकांश विषाक्त रोगों से बचा जा सकता है। पशुओं की सेहत सुरक्षित रहेगी तो पशुपालको की आय और देश की अर्थव्यवस्था दोनों मजबूत हो सकेगी।